आइए, करके देखें

गतिविधि 1 : राइमिंग रश

चित्रांकन : शिवेन्द्र पांडिया

यह गतिविधि प्री-स्कूल के बच्चों के लिए उपयोगी है। इसके ज़रिए सुनने की कुशलता और आवाज़ पहचानने की क्षमता बेहतर होती है। प्री-स्कूल के बच्चे शब्दों की ध्वनियों को समझने, कहानियों में तुकबन्दियों (rhymes) को पहचानने और उत्साह के साथ बातचीत करने में काफ़ी अच्छे होते हैं।

समूह का आकार : 10 से 20 बच्चों का समूह हो सकता है।

प्रक्रिया : बच्चे गोल घेरे में बैठाए जाते हैं। हर बच्चे को एक चित्र कार्ड दिया जाता है जिस पर कोई आसान-सा शब्द (जैसे–cat, pen, fun, आदि) लिखा होता है (चित्र का होना ज़रूरी नहीं है)।

शिक्षक एक बच्चे को एक कार्ड देते हैं। अगर वह कार्ड बच्चे के पास पहले से मौजूद कार्ड से मिलता-जुलता है (rhyme करता है) तो वे कहते हैं, "मैच हो गया!" और दोनों मिलते-जुलते शब्दों को पढ़कर बताते हैं। मसलन, *'sun'* और *'fun'*, *'cat'* और *'hat'*, आदि। अगर कार्ड मैच नहीं होता है तो वे कहते हैं, "मैच नहीं हुआ!" और वह कार्ड अगले बच्चे को दे देते हैं।

बच्चों को यह खेल खेलने में बहुत मज़ा आता है। वे मौज-मस्ती करते हुए सीखते हैं, और अगर उनसे कोई ग़लती हो भी जाती है तो वह उतनी बड़ी नहीं लगती, जितनी कि कोई पाठ पढ़ते समय या काग़ज़-पेंसिल वाला कोई अभ्यास करते समय लगती है।

यह गतिविधि भावना नायक ने साझा की है। वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन धमतरी, छत्तीसगढ़ की ईसीसीई टीम में कार्यरत हैं।

गतिविधि 2 : हमारे आस-पास के लोग

यह गतिविधि कक्षा 3 और उससे ऊपर की कक्षाओं के लिए उपयोगी है।

उद्देश्य : यह गतिविधि विद्यार्थियों को समुदाय में विभिन्न प्रकार की आजीविका में लगे लोगों और उनके काम को देखने तथा उनके बारे में अधिक जानने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके साथ ही, यह उनमें विभिन्न लोगों द्वारा किए जाने वाले कार्यों के प्रति सम्मान की भावना भी पैदा करती है।

इस गतिविधि को शुरू करने से पहले विद्यार्थियों को बताएँ कि आजीविका का आशय क्या है। उन्हें हर तरह के काम के महत्त्व, और हमारे जीवन से उसके जुड़ाव के बारे में बताएँ। इससे विद्यार्थियों में हर पेशे के प्रति सम्मान की भावना पैदा होगी।

विद्यार्थियों से कहें कि :

1. वे विद्यालय जाते समय अलग-अलग पेशों में लगे लोगों को ध्यान से देखें। उदाहरण के लिए, सब्ज़ी बेचने वाला, कपड़े सिलने वाला, ट्रैफ़िक पुलिसवाला, आदि।

2. वे उन पेशों के नाम बताएँ, और यह भी बताएँ कि वे लोगों को कौन-सी सेवा प्रदान करते हैं। मिसाल के तौर पर, कपड़े सिलने वाला दर्ज़ी, जिसे कई जगह टेलर या मास्टरजी कहते हैं, वह लोगों के नाप के अनुसार कपड़े सिलता है। इसके अलावा, वे झोला, सीट कवर, आदि जैसी कुछ उपयोगी चीज़ों की सिलाई भी करते हैं।

3. वे एक पेशा चुनें, और कक्षा को बताएँ कि वह पेशा लोगों के लिए क्यों और कैसे महत्त्वपूर्ण है। और अगर वह व्यक्ति उस काम को न करे तो क्या होगा?

4. यदि कोई ऐसा पेशा है जिसके बारे में विद्यार्थी और अधिक जानना चाहते हैं तो वह कौन-सा है? साथ ही, वे उस व्यक्ति से कौन-से पाँच सवाल पूछना चाहेंगे?

चित्रांकन : शिवेन्द्र पांडिया

शिक्षक, विद्यार्थियों द्वारा चुने हुए कुछ लोगों से मिलने का कार्यक्रम बना सकते हैं, और विद्यार्थियों को उनसे मिलवाकर, उनके सवालों के जवाब दिलवा सकते हैं। शिक्षक अलग-अलग काम करने वाले एक या दो लोगों को विद्यालय में बुलाकर, उनसे उनके काम के बारे में बात करने को भी कह सकते हैं।

यह गतिविधि चन्द्रिका मुरलीधर ने साझा की है। वे अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु में कम्युनिकेशन और पब्लिकेशन टीम में कार्यरत हैं। उनकी विज्ञान शिक्षा में विशेष रुचि है।

गतिविधि 3 : मेरी संख्या पता करो ?

यह गतिविधि कक्षा 5 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। यह रणनीति बनाने वाली गतिविधि है जो गणित से जुड़ी है। इससे विद्यार्थियों में गणित की तरह से सोचने-समझने की शक्ति बढ़ती है।

आसान स्तर :

शिक्षक किसी एक विद्यार्थी से कहते हैं कि वह स्वेच्छा से आगे आकर वॉलंटियर बने। वह कक्षा के सामने आता है। इस विद्यार्थी को एक संख्या (जैसे कि 1 से 100 के बीच की कोई एक संख्या) सोचनी होती है, और शिक्षक को फुसफुसाकर बतानी होती है। बाक़ी विद्यार्थियों को यह नहीं पता होता कि उस विद्यार्थी ने कौन-सी संख्या को चुना है।

कक्षा के बाक़ी विद्यार्थी उस वॉलंटियर से सवाल पूछते हैं ताकि वे उस संख्या का अन्दाज़ा लगा सकें जो वॉलंटियर ने चुनी है।

नियम :

1. पूछे जाने वाले सवाल ऐसे होने चाहिए जिनका जवाब सिर्फ़ 'हाँ' या 'नहीं' में दिया जा सके।
2. जवाब खोजने की कोशिश करते समय वे सीधे तौर पर किसी संख्या का नाम नहीं ले सकते। जैसे—क्या चुनी गई संख्या 65 है, आदि।

चूँकि यह रणनीति बनाने वाला खेल है, इसलिए इसमें संख्या का पता लगाने से ज़्यादा ज़रूरी सही सवाल पूछकर 'रणनीति बनाना' है।

शिक्षक विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए सभी सवालों और वॉलंटियर के जवाबों को ब्लैकबोर्ड पर लिखते रहते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ सवाल ऐसे हो सकते हैं : क्या यह संख्या 20 से बड़ी है; क्या यह 40 से छोटी है; क्या यह 20-30 के बीच है; आदि।

शिक्षक हर सवाल को पिछले सवालों से जोड़ते हुए सवालों और जवाबों को सही तरीक़े से रखते हैं। इससे विद्यार्थियों को सोचने और अगला सवाल बनाने में मदद मिलती है।

इस तरह, विद्यार्थी सही या ज़रूरी सवाल पूछने के तर्क पर आपस में चर्चा करते हैं, और सही जवाब तक पहुँचते हैं। मसलन, जब यह सवाल पूछा जाए कि क्या यह संख्या 20-30 के बीच है, और उसका जवाब 'नहीं' हो तब आगे यह पूछना बेकार होगा

कि क्या यह 30 से बड़ी है, क्योंकि यह सवाल विद्यार्थियों को सही जवाब की ओर आगे नहीं बढ़ाएगा।

कठिन स्तर

इस स्तर पर शिक्षक विद्यार्थियों द्वारा जवाब तक पहुँचने के लिए पूछे जा सकने वाले सवालों की संख्या सीमित कर देते हैं। जैसे कि वे केवल 7 सवाल पूछ सकते हैं। इससे विद्यार्थी कम-से-कम सवालों में सही जानकारी निकालने के लिए कारगर सवाल पूछना सीखते हैं।

शिक्षक उनके साथ इस बात पर भी चर्चा कर सकते हैं कि जब सवालों की संख्या सीमित हो तो कुछ ख़ास तरह के सवाल पूछना, जवाब तक पहुँचने का एक कारगर तरीक़ा क्यों नहीं है। ऐसे सवाल 'बेकार' माने जाते हैं। उदाहरण के लिए, 1 से 100 तक की संख्याओं वाले किसी सवाल में यह पूछना बेकार होगा कि वह संख्या विषम है या सम, क्योंकि यह संख्याओं के समूह को बस दो अलग-अलग, बराबर हिस्सों में बाँट देता है। नतीजतन, यह सवाल न तो जवाब खोजने के दायरे को सही तरीक़े से कम करता है न ही विद्यार्थियों को सही जवाब के क़रीब ले जाता है। इसके बजाय, अगर यह पूछा जाए कि क्या यह संख्या 1 और 50 के बीच है तो यह उन्हें सही जवाब के क़रीब ले जाने में मदद करेगा, क्योंकि अगर जवाब 'हाँ' है तो विद्यार्थी के लिए सही जवाब तक पहुँचने में आसानी हो जाती है। अगर जवाब 'नहीं' है तब भी वे सही जवाब के क़रीब ही होते हैं, क्योंकि इसका मतलब है कि सही जवाब 50 और 100 के बीच है।

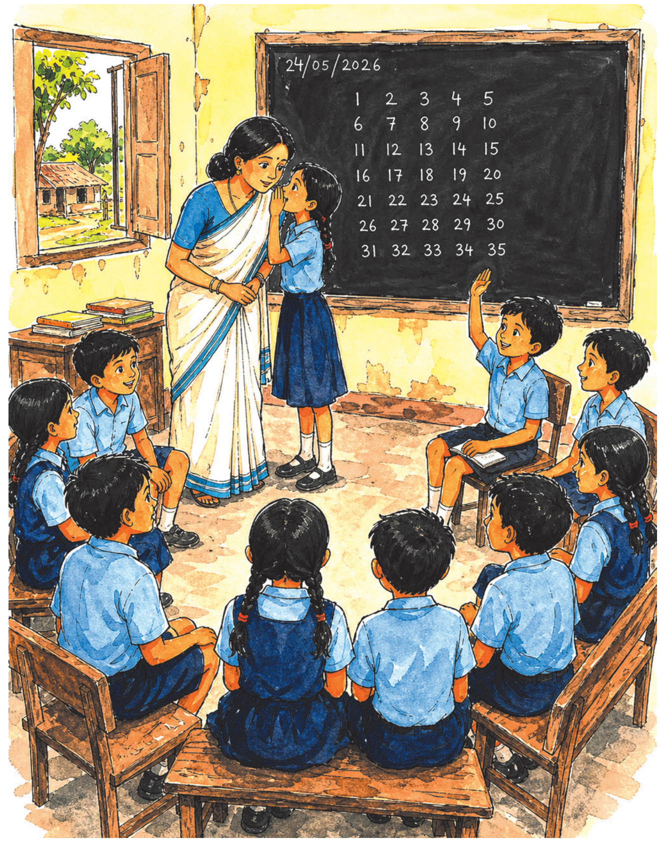

चित्रांकन : शिवेन्द्र पांडिया

यह गतिविधि कृतिका ने साझा की है जो अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु की कम्युनिकेशन टीम में कार्यरत हैं। उनकी कम्प्यूटेशनल थिंकिंग में गहरी रुचि है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।